शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

जयद्रथ-वध – काव्य खण्ड

कवि – मैथिलीशरण गुप्त

Date ______ Page ______

उस ओर द्रोणाचार्य थे, इस ओर अर्जुन वीर थे,
गुरु-शिष्य दोनों छोड़ते तीखे हजारों तीर थे।
हैं घोर वाद-विवाद करते दो प्रबल पण्डित यथा,
करने लगे दोनों परस्पर शस्त्र वे खण्डित तथा।
दोनों रथी इस शीघ्रता से थे शरों को छोड़ते,
जाना न जाता था कि वे कब थे धनुष पर जोड़ते।
थे बाण दोनों के गगन में इस तरह फहरा रहे–
ज्यों ऊर्मिमाली में अनेकों उरग-वर लहरा रहे॥

भावार्थ

प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि कौरवों और पाण्डवों के बीच हो रहे युद्ध का वर्णन करते हुए कहता है कि कौरवपक्ष की ओर से आचार्य द्रोणाचार्य और पांडवों की ओर से अर्जुन के बीच घमासान युद्ध चल रहा है। गुरु-शिष्य परस्पर एक दूसरे पर बड़ी तेजी के साथ हजारों तीर एक साथ छोड़ने लगे। उस समय ऐसा प्रतीत होता था मानों दो प्रकांड पण्डित परस्पर वाद-विवाद कर रहे हों। वे दोनों ही एक दूसरे के शस्त्रों को काट रहे थे।

कवि मैथिलीशरण गुप्त दोनों महान पराक्रमी वीरों के बीच हो रहे भयंकर युद्ध का वर्णन करते हैं। कवि कहता है कि दोनों महारथी गुरु द्रोणाचार्य और अर्जुन इतनी तेजी से एक दूसरे पर वाण की वर्षा कर रहे थे कि यह जानना कठिन था कि वे कब तीरों को धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़ाते हैं। दोनों के वाण आकाश में इस तरह फहरा रहे थे जैसे तरंगों की माला के बीच में अनेकों रंग के श्रेष्ठ साँप लहरा रहे हों।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
[redacted]
24/04/2021
रा०उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

अपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

दिगंत – भाग – 2 गद्य भाग

शीर्षक – रोज

लेखक – सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

प्रश्न1.– 'रोज' शीर्षक कहानी का सारांश लिखें।

उत्तर:- 'रोज' कथा साहित्य में क्रान्तिकारी परिवर्तन के प्रणेता महान कथाकार सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय की सर्वाधिक चर्चित कहानी है। प्रस्तुत कहानी में सम्बन्धों की वास्तविकता को एकान्त वैयक्तिक अनुभूतियों से अलग जाकर सामाजिक सन्दर्भ में देखा गया है। मध्यवर्ग की पारिवारिक एकरसता को जितनी मार्मिकता से कहानी व्यक्त कर सकी है वह उस की कहानियों में विरल है।

लेखक अपने दूर ~~की~~ के रिश्ते की बहन मालती जिसे सखी कहना उचित है, से मिलने अठारह मील पैदल चलकर पहुँचता है। मालती और लेखक का जीवन ~~इकट्ठे~~ इकट्ठे खेलने, पिटने, स्वेच्छा एवं स्वच्छन्दता तथा भ्रातृत्व के छोटे पन ~~के~~ के बंधनों से मुक्त बीता था। आज मालती विवाहिता है, एक बच्चे की माँ भी है वार्तालाप के क्रम में आए उतार-चढ़ाव ~~के~~ में लेखक अनुभव करता है कि मालती की आँखों में विचित्र-सा-भाव है, मानो वह भीतर कहीं कुछ चेष्टा कर रही हो, किसी बीती बात को याद करने की। किसी बिखरे हुए वायुमण्डल को पुनः जगाकर गतिमान करने की और चेष्टा में सफल न हो चिर विस्मृत हो गयी हो। मालती रोज कोल्हू की बैल की तरह व्यस्त रहती है। उसका जीवन गैंग्रीन मर्ज के समान है जिसका ऑपरेशन उसके डाक्टर पति द्वारा किया जाता है। पूरे दिन काम करना, बच्चे की देख-भाल करना और पति का इंतजार करना इतने में ही मानों उसका जीवन सिमट गया है।

वातावरण, परिस्थिति और उसके प्रभाव में ढलते हुए एक गृहिणी के चरित्र का मनोवैज्ञानिक उद्घाटन अत्यन्त कलात्मक रीति से लेखक यहाँ प्रस्तुत करता है। डॉ० पति के काम पर चले जाने के

(शेष आगे)

बाद का सारा समय मालती को घर में एकाकी काटना होता है। उसका दुर्बल और चिड़चिड़ा पुत्र हमेशा रोता रहता है। मालती उसकी देख-भाल करती हुई सुबह से रात ग्यारह बजे तक घर के कार्यों में अपने को व्यस्त रखती है। उसका जीवन उदासी के बीच यंत्रवत चल रहा है। किसी प्रकार का उल्लास या उत्साह उसके जीवन में नहीं रह गए हैं।

इस प्रकार लेखक मध्यवर्गीय भारतीय समाज में घरेलु स्त्री के जीवन और मनोदशा पर सहानुभूति पूर्ण मानवीय दृष्टि केन्द्रित करता है। कहानी के गर्भ में अनेक सामाजिक प्रश्न विचारोत्तेजक रूप में पैदा होते हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद
[redacted]
एसो० प्रो० हिन्दी 24/04/21
रा० ऊ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

निबन्ध माला — शास्त्री द्वितीय खण्ड
अ० द्वि० पत्र - राष्ट्रभाषा हिन्दी

शीर्षक :- रामायण
लेखक :- डॉ० राम मनोहर लोहिया

Page No.:
Date : / /

लघु-उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. प्रश्न :- किसी भी रचना के मूल्यांकन में पाठक की क्या भूमिका होनी चाहिए?

उत्तर :- समाजवादी चिंतक डॉ० राम मनोहर लोहिया अपने निबन्ध 'रामायण' में यह प्रश्न उठाते हैं कि किसी भी कृति या रचना के मूल्यांकन में पाठक की क्या भूमिका होनी चाहिए। इसी प्रश्न का उत्तर देते हुए डॉ० लोहिया कहते हैं कि पाठक की भूमिका तटस्थ होनी चाहिए। तटस्थता अतिआवश्यक है। किसी भी रचना के अध्ययन में पाठक को पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं होना चाहिए। यदि पाठक पूर्व से ही किसी विशेष धारणा से प्रभावित रहेगा तो उससे रचना की सम्यक समीक्षा नहीं हो सकती है। पाठक को निष्पक्ष होकर रचना या कृति के गुण-दोष के आधार पर समीक्षा करनी चाहिए। यदि कोई पाठक इसके आधार पर मूल्यांकन नहीं करता है तो वह मूल्यांकन सर्वग्राह्य नहीं होता है।

अतः पाठक का यह दायित्व बनता है कि किसी लेखक या कवि की कृति का गहन अध्ययन करने के उपरांत उसके गुण-दोष के आधार पर उसकी समीक्षा करनी चाहिए। ऐसा करके ही हम रचना के साथ न्याय कर सकते हैं। डॉ० राम मनोहर लोहिया जी ने भी बिना राग-द्वेष के आधार पर 'रामायण' शीर्षक निबन्ध का मूल्यांकन सफलता पूर्वक किया है।

2. प्रश्न :- 'रामायण' शीर्षक निबन्ध में डॉ० लोहिया जी नारी के सम्बन्ध में क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर :- समर चिंतक डॉ० लोहिया जी का कहना है कि

शेष आगे —

संत गोस्वामी तुलसी दासजी नारी स्वतंत्रता एवं समानता के जानदार और शानदार कवि हैं। उनका कहना है कि संत तुलसीदास ने 'सियाराम मय सब जग जानी' कहकर समस्त नारी समाज को ऊँचा उठाने का कार्य किया है। लेखक का यह भी कहना है कि कुछ पक्षपाती लोगों ने गोस्वामी तुलसीदास की चौपाइयों में का गलत और निरर्थक अर्थ निकालकर उन्हें नारी विरोधी बताने का प्रयास किया है। परन्तु वैसे कुत्सित लोगों का आरोप बिल्कुल मिथ्याचार है। इसीलिए अयोध्या जी ने संत गोस्वामी तुलसीदास जी को नारियों का सबसे बड़ा रक्षक माना है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
24/04/2021